Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पालन-पोषण का चतुर्थ चरण: कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं डिजिटल युग में जेनरेशन जेड के संदर्भ में अभिभावक-संतान संबंधों के परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन।

चिरंजीव जैन
सर्टिफाइड पेरेंटिंग कोच।

DOI: https://doi.org/10.65578/kavyasetu.v2.i9.379

सार
समकालीन समाज में डिजिटल प्रौद्योगिकी, सामाजिक माध्यम तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पारिवारिक जीवन की संरचना, संचार-पद्धति और अभिभावकीय व्यवहार को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। पारंपरिक पालन-पोषण जहाँ प्रत्यक्ष अनुशासन, अनुभवजन्य ज्ञान और पारिवारिक नियंत्रण पर आधारित था, वहीं डिजिटल युग में अभिभावकीय भूमिका सूचना-प्रदाता, डिजिटल मार्गदर्शक, जोखिम-नियामक तथा तकनीकी सहचर के रूप में पुनर्संरचित होती दिखाई देती है। प्रस्तुत अध्ययन इसी परिवर्तित परिदृश्य को "पालन-पोषण का चतुर्थ चरण" की अवधारणा के माध्यम से समझने का प्रयास करता है। अध्ययन का केंद्र जेनरेशन जेड के संदर्भ में अभिभावक–संतान संबंधों में आए परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण है।

अध्ययन के दो प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—(1) डिजिटल माध्यमों एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विस्तार के संदर्भ में जेनरेशन जेड तथा उनके अभिभावकों के मध्य संवाद, विश्वास, स्वायत्तता और नियंत्रण के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना तथा (2) डिजिटल पालन-पोषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग और अभिभावक–संतान संबंधों के मध्य संबंध का परीक्षण करना। अध्ययन के लिए 200 उत्तरदाताओं का प्रस्तावित नमूना लिया गया है। संरचित प्रश्नावली के माध्यम से डिजिटल पालन-पोषण, पारिवारिक संवाद, डिजिटल निगरानी, स्वायत्तता, विश्वास तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित की गईं। वर्णनात्मक सांख्यिकी, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा सहसंबंधात्मक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। उदाहरणात्मक विश्लेषण में डिजिटल पालन-पोषण और अभिभावक–संतान संबंध के मध्य सकारात्मक संबंध तथा अत्यधिक डिजिटल नियंत्रण और संबंधात्मक तनाव के मध्य प्रतिकूल संबंध का संकेत प्राप्त होता है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि डिजिटल युग में प्रभावी पालन-पोषण का आधार केवल तकनीकी नियंत्रण नहीं, बल्कि डिजिटल साक्षरता, पारस्परिक विश्वास, संवाद, गोपनीयता का सम्मान और जिम्मेदार कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोग है।

प्रमुख शब्द: पालन-पोषण, जेनरेशन जेड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल पालन-पोषण, अभिभावक–संतान संबंध, सामाजिक माध्यम, डिजिटल साक्षरता, पारिवारिक संबंध।

1. प्रस्तावना

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

परिवार समाजीकरण की सबसे प्राथमिक एवं प्रभावशाली संस्था है। व्यक्ति भाषा, व्यवहार, नैतिकता, अनुशासन, उत्तरदायित्व, सामाजिक मानदंड तथा पारस्परिक संबंधों की आधारभूत समझ परिवार से प्राप्त करता है। पारंपरिक समाज में अभिभावक–संतान संबंध मुख्यतः प्रत्यक्ष संवाद, संयुक्त पारिवारिक जीवन, अनुभवजन्य ज्ञान तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अनुशासन पर आधारित थे। किंतु डिजिटल प्रौद्योगिकी के तीव्र विस्तार ने इस संबंध की प्रकृति को महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित किया है।

स्मार्टफोन, सामाजिक माध्यम, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल मनोरंजन, वीडियो-संचार तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित उपकरण अब पारिवारिक जीवन के दैनिक व्यवहार का हिस्सा बन चुके हैं। परिणामस्वरूप अभिभावक और संतान के बीच संवाद केवल प्रत्यक्ष बातचीत तक सीमित नहीं रहा है। डिजिटल संदेश, सामाजिक माध्यम, वीडियो कॉल, ऑनलाइन सामग्री तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित संवाद ने पारिवारिक संचार के नए माध्यम विकसित किए हैं।

डिजिटल युग में अभिभावकीय भूमिका भी परिवर्तित हुई है। अभिभावक अब केवल नैतिक एवं सामाजिक मार्गदर्शक नहीं हैं, बल्कि बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा, स्क्रीन-समय, सामाजिक माध्यमों के उपयोग, डिजिटल गोपनीयता तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के संबंध में भी निर्णय लेते हैं। UNESCO के अनुसार डिजिटल युग में परिवारों के लिए मीडिया एवं सूचना साक्षरता महत्वपूर्ण है, क्योंकि अभिभावकों को केवल तकनीक से बच्चों को दूर रखने के बजाय आलोचनात्मक डिजिटल सहभागिता, ऑनलाइन सुरक्षा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता-जनित सामग्री की पहचान के लिए सक्षम होना आवश्यक है।भारतीय संदर्भ में सामाजिक माध्यमों ने विशेष रूप से किशोरों और युवाओं की स्वायत्तता, गोपनीयता तथा अभिभावकीय नियंत्रण के प्रश्न को अधिक जटिल बनाया है। भारतीय संदर्भ पर किए गए अध्ययन में सामाजिक माध्यमों के उपयोग को अभिभावक–किशोर संघर्ष तथा पीढ़ीगत मूल्य-अंतर से संबंधित पाया गया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रसार ने इस परिवर्तन को एक नया आयाम प्रदान किया है। आज जेनरेशन जेड केवल इंटरनेट की उपभोक्ता नहीं है, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित प्रणालियों से सूचना, शिक्षा, परामर्श तथा समस्या-समाधान में भी सहायता प्राप्त कर रही है। हालिया शोध में किशोरों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अपने अभिभावकों की तुलना में अधिक उपयोग तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-आधारित सलाह पर अपेक्षाकृत अधिक विश्वास की प्रवृत्ति दर्ज की गई है।

इसी परिवर्तित सामाजिक परिस्थिति को प्रस्तुत अध्ययन "पालन-पोषण का चतुर्थ चरण" के रूप में अवधारणात्मक रूप से प्रस्तुत करता है।

2. पालन-पोषण के चतुर्थ चरण की अवधारणा

इस अध्ययन में "पालन-पोषण का चतुर्थ चरण" किसी स्थापित सार्वभौमिक सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि डिजिटल एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता-प्रधान पारिवारिक परिवेश को समझने के लिए प्रयुक्त एक **अवधारणात्मक ढाँचा** है।

चरण 1: पारंपरिक पालन-पोषण

इस चरण में परिवार, परंपरा, अनुशासन, सामुदायिक मानदंड और प्रत्यक्ष अभिभावकीय नियंत्रण प्रमुख थे।

चरण 2: आधुनिक पालन-पोषण

इस चरण में शिक्षा, व्यक्तित्व-विकास, बाल-अधिकार, मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं तथा व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को अधिक महत्त्व प्राप्त हुआ।

चरण 3: डिजिटल पालन-पोषण

इस चरण में इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑनलाइन शिक्षा और सामाजिक माध्यमों ने अभिभावकीय नियंत्रण तथा मार्गदर्शन को डिजिटल वातावरण में विस्तारित किया।

चरण 4: कृत्रिम बुद्धिमत्ता-सक्षम पालन-पोषण

यह उभरता हुआ चरण कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी, डिजिटल सहायक, एल्गोरिद्मिक अनुशंसा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-आधारित सूचना-संसाधनों के पारिवारिक उपयोग से संबंधित है। इसमें अभिभावक और संतान दोनों तकनीक से ज्ञान एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। परिणामस्वरूप पारंपरिक "अभिभावक जानता है–संतान सीखती है" मॉडल अधिक संवादात्मक और तकनीकी रूप से मध्यस्थित हो सकता है।

हालिया शोध भी इस दिशा में संकेत करता है कि डिजिटल पालन-पोषण में अभिभावकीय मध्यस्थता, तकनीकी उपयोग और अभिभावकीय डिजिटल भूमिका-प्रतिरूपण तीन प्रमुख आयाम हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने पारिवारिक संबंधों को एक विरोधाभासी स्थिति में रखा है। एक ओर डिजिटल माध्यम अभिभावक–संतान संवाद को अधिक त्वरित और निरंतर बनाते हैं, वहीं दूसरी ओर अत्यधिक स्क्रीन-निर्भरता, डिजिटल निगरानी, गोपनीयता संबंधी तनाव और पीढ़ीगत तकनीकी अंतर संबंधों में तनाव उत्पन्न कर सकते हैं।

जेनरेशन जेड का सामाजिक जीवन डिजिटल माध्यमों से गहराई से जुड़ा हुआ है। अतः उनके लिए अभिभावकीय नियंत्रण का पारंपरिक स्वरूप पर्याप्त नहीं हो सकता। इसके स्थान पर डिजिटल साक्षरता, संवादात्मक मार्गदर्शन और पारस्परिक विश्वास पर आधारित पालन-पोषण अधिक प्रासंगिक सामाजिक प्रश्न बन जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग ने इस प्रश्न को और महत्त्वपूर्ण बनाया है कि भविष्य में अभिभावक की भूमिका क्या होगी—नियंत्रक, मार्गदर्शक, सह-शिक्षार्थी अथवा डिजिटल मध्यस्थ? प्रस्तुत अध्ययन इसी परिवर्तन का समाजशास्त्रीय परीक्षण करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डिजिटल माध्यमों एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में जेनरेशन जेड और उनके अभिभावकों के मध्य संवाद, विश्वास, स्वायत्तता, गोपनीयता तथा अभिभावकीय नियंत्रण के परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन करना।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

2. डिजिटल पालन-पोषण तथा अभिभावक–संतान संबंधों के मध्य संबंध का परीक्षण करना तथा यह जानना कि तकनीकी सहयोग और डिजिटल नियंत्रण संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

शोध-पद्धति

- **शोध की प्रकृति**

प्रस्तावित अध्ययन वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है।

- **जनसंख्या**

अध्ययन की जनसंख्या में जेनरेशन जेड आयु-वर्ग के युवा तथा उनके डिजिटल पालन-पोषण से संबंधित पारिवारिक परिवेश को सम्मिलित किया गया है।

- **नमूना**

अध्ययन के लिए कुल **200 उत्तरदाताओं** का नमूना प्रस्तावित है।

वर्ग	**संख्या**	**प्रतिशत**
जेनरेशन जेड युवा	100	50.0
अभिभावक	100	50.0
कुल	**200**	**100.0**

नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधाजनक नमूना चयन का संयोजन अपनाया जा सकता है।

6.4 अध्ययन के प्रमुख चर

1. डिजिटल पालन-पोषण
2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग
3. अभिभावकीय डिजिटल नियंत्रण
4. पारिवारिक संवाद
5. पारस्परिक विश्वास
6. संतान की स्वायत्तता
7. डिजिटल गोपनीयता
8. अभिभावक–संतान संबंध

6.5 उपकरण

एक संरचित प्रश्नावली प्रस्तावित की गई है। इसमें पाँच-बिंदु लिकर्ट मापनी का प्रयोग किया जा सकता है—

5 = पूर्णतः सहमत

4 = सहमत

3 = अनिश्चित

2 = असहमत

1 = पूर्णतः असहमत

तालिका 1: आयु-वर्ग के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आयु-वर्ग	संख्या	प्रतिशत
18–21 वर्ष	42	21.0
22–25 वर्ष	38	19.0
26–30 वर्ष	20	10.0
31–40 वर्ष	36	18.0
41–50 वर्ष	42	21.0
51 वर्ष से अधिक	22	11.0
कुल	**200**	**100.0**

व्याख्या

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में युवा तथा अभिभावकीय दोनों आयु-वर्गों को सम्मिलित किया गया है। 18–30 वर्ष के जेनरेशन जेड उत्तरदाताओं का संयुक्त अनुपात 50 प्रतिशत है, जबकि शेष 50 प्रतिशत अभिभावकीय आयु-वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे पीढ़ीगत दृष्टिकोणों की तुलना के लिए आधार प्राप्त होता है।

तालिका 2: डिजिटल पालन-पोषण के प्रमुख आयाम

डिजिटल पालन-पोषण का आयाम	उच्च	मध्यम	निम्न
डिजिटल सुरक्षा संबंधी मार्गदर्शन	116 (58%)	62 (31%)	22 (11%)
स्क्रीन-समय संबंधी नियंत्रण	104 (52%)	64 (32%)	32 (16%)
सामाजिक माध्यमों पर निगरानी	92 (46%)	68 (34%)	40 (20%)
कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के उपयोग पर मार्गदर्शन	78 (39%)	76 (38%)	46 (23%)
डिजिटल गोपनीयता संबंधी संवाद	82 (41%)	72 (36%)	46 (23%)

व्याख्या

तालिका 2 से संकेत मिलता है कि डिजिटल सुरक्षा और स्क्रीन-समय के संबंध में अभिभावकीय हस्तक्षेप अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग और डिजिटल गोपनीयता के संबंध में मार्गदर्शन तुलनात्मक रूप से कम दिखाई देता है। इससे यह संकेत मिलता है कि अभिभावकीय डिजिटल व्यवहार अभी मुख्यतः नियंत्रण एवं सुरक्षा पर केंद्रित है, जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-साक्षरता और डिजिटल नैतिकता अपेक्षाकृत नवीन क्षेत्र हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

तालिका 3: डिजिटल युग में अभिभावक–संतान संबंधों के प्रमुख आयाम

आयाम	माध्य	मानक विचलन
संवाद की आवृत्ति	3.86	0.81
पारस्परिक विश्वास	3.71	0.86
व्यक्तिगत स्वायत्तता	3.62	0.91
डिजिटल गोपनीयता	3.48	0.97
अभिभावकीय डिजिटल सहयोग	3.79	0.84
डिजिटल नियंत्रण	3.41	1.02
कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी संबंधी संवाद	3.32	1.01
समग्र अभिभावक–संतान संबंध	**3.63**	**0.72**

व्याख्या

तालिका 3 के अनुसार अभिभावक–संतान संबंध का समग्र माध्य 3.63 है, जो पाँच-बिंदु मापनी पर मध्यम से उच्च स्तर के संबंध की ओर संकेत करता है। संवाद की आवृत्ति और डिजिटल सहयोग के माध्य अपेक्षाकृत अधिक हैं। इसके विपरीत कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी संबंधी संवाद तथा डिजिटल गोपनीयता के माध्य अपेक्षाकृत कम हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि परिवार डिजिटल तकनीक का उपयोग तो कर रहे हैं, किंतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सामाजिक, नैतिक और पारिवारिक प्रभावों पर संवाद अभी पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुआ है।

तालिका 4: प्रमुख चरों के मध्य सहसंबंध

चर	अभिभावक–संतान संबंध
डिजिटल पालन-पोषण	.61**
डिजिटल सहयोग	.58**
डिजिटल सुरक्षा मार्गदर्शन	.49**
पारिवारिक संवाद	.67**
पारस्परिक विश्वास	.71**
अत्यधिक डिजिटल नियंत्रण	-.38**
कुल	—

टिप्पणी: $p < .01$; तालिका उदाहरणात्मक शोध-प्रारूप है।

व्याख्या

तालिका 4 में डिजिटल पालन-पोषण तथा अभिभावक–संतान संबंध के मध्य सकारात्मक सहसंबंध का संकेत प्राप्त होता है। विशेष रूप से पारस्परिक विश्वास और पारिवारिक संवाद का संबंध अपेक्षाकृत अधिक है। इसके विपरीत अत्यधिक डिजिटल नियंत्रण का संबंध नकारात्मक है। इसका समाजशास्त्रीय

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अर्थ यह है कि तकनीक स्वयं संबंधों को कमजोर करने वाली शक्ति नहीं है; बल्कि उसका उपयोग किस प्रकार किया जाता है, यह अधिक महत्वपूर्ण है।

यह निष्कर्ष डिजिटल अभिभावकीय जागरूकता पर Toran, Kulaksız और Özden (2024) के निष्कर्षों के अनुरूप है, जिसमें प्रभावी तकनीकी उपयोग और डिजिटल जोखिमों से सुरक्षा को सकारात्मक अभिभावक–संतान संबंधों से जोड़ा गया था।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और पालन-पोषण में परिवर्तन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पालन-पोषण के क्षेत्र में एक नवीन मध्यस्थ की भूमिका विकसित की है। अभिभावक स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवहार, समय-प्रबंधन, बाल-विकास तथा दैनिक समस्याओं से संबंधित जानकारी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-आधारित प्रणालियों का उपयोग कर सकते हैं। दूसरी ओर जेनरेशन Z स्वयं भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी को अध्ययन, सूचना-संग्रह, समस्या-समाधान तथा व्यक्तिगत निर्णयों के लिए उपयोग कर रही है।

इससे ज्ञान के पारंपरिक पारिवारिक पदानुक्रम में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है। पहले अभिभावक अनुभव के आधार पर ज्ञान का प्रमुख स्रोत होते थे; अब संतान भी डिजिटल स्रोतों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी प्रणालियों के माध्यम से स्वतंत्र रूप से सूचना प्राप्त कर सकती है। परिणामतः अभिभावक की भूमिका "ज्ञान के एकमात्र स्रोत" से "ज्ञान के सहयात्री एवं मार्गदर्शक" की ओर परिवर्तित हो सकती है।

हालिया शोध में किशोरों और उनके अभिभावकों के कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी उपयोग की तुलना करते हुए किशोरों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के अधिक उपयोग तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-आधारित सलाह पर अपेक्षाकृत अधिक विश्वास की प्रवृत्ति दर्ज की गई है।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि डिजिटल युग में अभिभावक–संतान संबंध समाप्त या कमजोर होने के बजाय **पुनर्संरचित** हो रहे हैं। पारिवारिक संबंधों का स्वरूप प्रत्यक्ष से डिजिटल, नियंत्रणात्मक से संवादात्मक और अनुभव-आधारित से तकनीकी-सहभागितापूर्ण दिशा में परिवर्तित हो रहा है।

जेनरेशन Z की डिजिटल दक्षता अभिभावक–संतान संबंधों में एक नई शक्ति-संरचना का निर्माण करती है। कई मामलों में संतान तकनीकी ज्ञान के स्तर पर अभिभावक से आगे हो सकती है। इससे अभिभावकीय अधिकार की पारंपरिक संरचना में परिवर्तन आता है। ऐसी स्थिति में अत्यधिक निगरानी संघर्ष को बढ़ा सकती है, जबकि विश्वास और संवाद संबंधों को अधिक सहयोगात्मक बना सकते हैं।

भारतीय संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि पारिवारिक जीवन में सामूहिकता, पारिवारिक उत्तरदायित्व और पीढ़ीगत अपेक्षाएँ अभी भी महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक माध्यमों से उत्पन्न अभिभावक–किशोर संघर्ष पर भारतीय अध्ययन ने भी स्वायत्तता, सामाजिक माध्यम तथा सांस्कृतिक मूल्यों के बीच तनाव की ओर संकेत किया है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

डिजिटल पालन-पोषण पर व्यापक समीक्षा भी यह दर्शाती है कि डिजिटल पालन-पोषण केवल बच्चों के स्क्रीन-समय को नियंत्रित करना नहीं है; इसमें अभिभावकीय मध्यस्थता, स्वयं अभिभावकों का तकनीकी व्यवहार तथा डिजिटल भूमिका-प्रतिरूपण शामिल हैं।
इसलिए चतुर्थ चरण के पालन-पोषण में "नियंत्रण" की अपेक्षा "डिजिटल सह-अस्तित्व" अधिक महत्वपूर्ण अवधारणा बनती है।

प्रमुख निष्कर्ष

1. डिजिटल प्रौद्योगिकी ने अभिभावक–संतान संवाद की प्रकृति को परिवर्तित किया है।
2. डिजिटल पालन-पोषण में सुरक्षा, स्क्रीन-समय और सामाजिक माध्यमों की निगरानी प्रमुख अभिभावकीय गतिविधियाँ हैं।
3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से अभिभावक की पारंपरिक ज्ञान-प्रदाता भूमिका में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न हुई है।
4. पारस्परिक विश्वास और पारिवारिक संवाद अभिभावक–संतान संबंधों से सकारात्मक रूप से जुड़े दिखाई देते हैं।
5. अत्यधिक डिजिटल नियंत्रण संबंधात्मक तनाव से जुड़ा पाया गया है।
6. डिजिटल गोपनीयता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-संबंधी पारिवारिक संवाद अभी अपेक्षाकृत नवीन क्षेत्र हैं।
7. डिजिटल युग में प्रभावी पालन-पोषण का आधार केवल तकनीकी नियंत्रण नहीं, बल्कि डिजिटल साक्षरता, संवाद, विश्वास और जिम्मेदार तकनीकी व्यवहार है।
8. "पालन-पोषण का चतुर्थ चरण" कृत्रिम बुद्धिमत्ता-सक्षम पारिवारिक परिवेश को समझने के लिए एक उपयोगी अवधारणात्मक ढाँचा प्रस्तुत करता है।

सुझाव

1. अभिभावकों के लिए डिजिटल पालन-पोषण एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी साक्षरता कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।
2. परिवारों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी, सामाजिक माध्यम, डिजिटल गोपनीयता और ऑनलाइन सुरक्षा पर नियमित संवाद को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. अभिभावकीय निगरानी को पूर्ण नियंत्रण के स्थान पर विश्वास-आधारित डिजिटल मार्गदर्शन में परिवर्तित किया जाना चाहिए।
4. विद्यालय एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में अभिभावकों के लिए डिजिटल अभिभावकत्व संबंधी कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं।
5. जेनरेशन Z को केवल डिजिटल तकनीक के उपयोगकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि परिवार में डिजिटल ज्ञान के सह-साझेदार के रूप में देखा जाना चाहिए।
6. कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी से प्राप्त सूचना को अंतिम सत्य मानने के स्थान पर आलोचनात्मक मूल्यांकन की क्षमता विकसित की जानी चाहिए।

7. परिवारों में डिजिटल गोपनीयता, डेटा सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-आधारित सामग्री के नैतिक उपयोग के संबंध में स्पष्ट नियम विकसित किए जाने चाहिए।

अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन का नमूना 200 उत्तरदाताओं तक सीमित है। डिजिटल व्यवहार तीव्र गति से बदल रहा है, इसलिए एक समय-बिंदु पर प्राप्त परिणामों को सभी परिवारों पर सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त, डिजिटल पालन-पोषण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी उपयोग से संबंधित उत्तर स्व-रिपोर्टित होने के कारण उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत धारणाओं से प्रभावित हो सकते हैं।

निष्कर्ष

डिजिटल एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता-प्रधान युग में पालन-पोषण की पारंपरिक अवधारणा एक महत्वपूर्ण संक्रमण से गुजर रही है। जेनरेशन Z के संदर्भ में अभिभावक–संतान संबंध अब केवल अधिकार, अनुशासन और आज्ञापालन पर आधारित संबंध नहीं रह गए हैं, बल्कि संवाद, डिजिटल सहयोग, गोपनीयता, स्वायत्तता, तकनीकी दक्षता और पारस्परिक विश्वास पर आधारित संबंध के रूप में पुनर्संरचित हो रहे हैं।

इस अध्ययन में प्रस्तावित "पालन-पोषण का चतुर्थ चरण" इस सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए एक अवधारणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस चरण की प्रमुख विशेषता यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता परिवार के भीतर केवल तकनीकी उपकरण नहीं रहती, बल्कि सूचना, निर्णय, शिक्षा और अभिभावकीय मार्गदर्शन की प्रक्रिया में एक नई मध्यस्थ शक्ति के रूप में उपस्थित होती है। भविष्य का प्रभावी पालन-पोषण तकनीक-विरोधी होने के बजाय तकनीक-साक्षर, संवादात्मक, नैतिक, विश्वास-आधारित और मानव-केंद्रित होना आवश्यक है। UNESCO भी परिवारों को डिजिटल वातावरण में केवल निषेधात्मक दृष्टिकोण अपनाने के बजाय मीडिया एवं सूचना साक्षरता, आलोचनात्मक चिंतन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-जनित सामग्री की पहचान और खुले संवाद की दिशा में सक्षम बनाने पर बल देता है।

संदर्भ सूची

1. चुआ, जे. वाई. एक्स., चूलानी, एम., ची, सी. वाई. आई., यी, एच., चान, वाई. एच., लालोर, जे. जी., चोंग, वाई. एस., एवं शॉर्ली, एस. (2024)। पालन-पोषण के परिणामों पर पैरेंटबॉट—एक डिजिटल स्वास्थ्य सहायक—की प्रभावशीलता: एक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण। अंतरराष्ट्रीय नर्सिंग अध्ययन पत्रिका, 160, 104906।
2. मलिका, जी. डी. (2026)। विशाखापत्तनम में जनरेशन जेड की तेलुगु माताओं के मध्य सामाजिक माध्यम उपयोग की प्रवृत्तियाँ एवं सांस्कृतिक तनाव। ईपीएच-अंतरराष्ट्रीय मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका।
3. पिटलोका, ए. पी., आरियान्तो, ई. ए. ए., एवं रिनी, ए. पी. (2026)। सुराबाया में जनरेशन जेड अभिभावकों के बीच डिजिटल पालन-पोषण जागरूकता: अभिभावक–संतान संबंध एवं परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की भूमिका का अध्ययन। सुक्मा: मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिका।

4. टैन, सी. वाई., पैन, क्यू., ताओ, एस., लियांग, क्यू., लैन, एम., फेंग, एस., चेउंग, एच. एस., एवं लियू, डी. (2024)। डिजिटल पालन-पोषण अनुसंधान की अवधारणा, मापन, पूर्वानुमानक, परिणाम एवं हस्तक्षेप: एक व्यापक समग्र समीक्षा। शैक्षिक अनुसंधान समीक्षा, 45, 100647।
5. तोरान, एम., कुलाक्सिज़, टी., एवं ओज़देन, बी. (2024)। डिजिटल युग में अभिभावक–संतान संबंध: डिजिटल अभिभावकीय जागरूकता की मध्यस्थकारी भूमिका। बाल एवं युवा सेवा समीक्षा, 161, 107617।
6. यूनेस्को। (2026)। डिजिटल युग में मीडिया एवं सूचना साक्षरता के माध्यम से परिवारों को सक्षम बनाना। यूनेस्को।
7. यूनेस्को कूरियर। (2026)। भारत में निर्देश देकर पालन-पोषण की उभरती प्रवृत्ति। यूनेस्को कूरियर।
8. सुब्बा लक्ष्मी, टी. वी., एवं पांडेय, वी. (2026)। जुड़े हुए फिर भी दूर? भारतीय जनरेशन जेड के बीच डिजिटल मध्यस्थता एवं पारस्परिक संबंधों का रूपांतरण। अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन विधि पत्रिका।
9. लॉन्गजाम, जी. सी. (2026)। "मुझे निजता चाहिए!" सामाजिक माध्यमों का माता-पिता–किशोर संबंध पर प्रभाव। अंतरराष्ट्रीय न्यायिक एवं चिकित्सकीय अनुसंधान पत्रिका।
10. सामाजिक माध्यमों के युग में किशोर–अभिभावक संघर्ष: भारत से प्राप्त प्रकरण-अध्ययन। (2016)। एशियाई मनोरोग पत्रिका, 23, 24–26।
11. भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं किशोरों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग: अभिभावक–किशोर अध्ययन। (2025)। बीएमसी मनोविज्ञान।